हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा – X I I (2018-19)

प्रतिदर्श – प्रश्न – पत्र

निर्धारित समय: 3 घंटे अधिकतम अंक : 80

समान्य निर्देश :

- इस प्रश्न – पत्र में तीन खंड है, क,ख,ग ।
- तीन खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव तीनो खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए ।

	खंड-क	
1.	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए	11
	उस दिन बसंत पंचमी थी। सुबह उठते ही कोयल की कूक सुनाई पड़ गई। मन खुश हो गया। इस कोयल ने भी क्या दिन चुना यहाँ आने को । अलसाया सा उठा और अपनी खिड़की से गुलमोहर को देखने लगा। इस उम्मीद में कि शायद कोयल ही दिखलाई पड़ जाए। कोयल तो नहीं दिखी यों उसकी कूक कहीं से आती जाती रही । अब अपने गुलमोहर को देखा तो मन उदास हो गया। इन दिनों यह होता ही है। उसे देखने का मन ही नहीं होता। अजीब बात है कि बसंत आता है तो वह बुझा-बुझा सा नजर आता है। जैसे झर रहा हो वह। उसकी खिलखिलाहट कहीं खो गई हो। एक किस्म की झुंझलाहट होने लगती है। बसंत है या पतझर । बसंत क्या आता है उसका एक-एक पत्ता झरने लगता है। फागुन का महीना चल रहा है। और हम बसंत पंचमी पहले ही मना चुके हैं। कमाल के लोग हैं यहाँ। बसंत पंचमी मना लेते हैं माघ में और बसंत आता है फागुन के भी बाद चैत्र बैसाख में। माघ और फागुन में तो शिशिर माना जाता है। लेकिन माघ बीतते ही उसे बसंत की आहट सुनाई पड़ने लगती है। बसंत की दस्तक को ही उत्सव में बदल देता है वह उनके लिए तो बसंत पंचमी से ही बसंत शुरू हो जाता है। शास्त्र मानते रहें चैत्र बैसाख में बसंत लेकिन यहाँ का लोक तो फगुनाहट को ही बसंत मानता है।	

	दिल्ली में पेड़ो की कतारें हैं। किसी सड़क से निकलते हुए किसी पेड़ के नीचे से गुजरिए। पीले पत्ते अनायास आपके पैरों तले चरमर करने लगते हैं। कोई-कोई पत्ता आपके ऊपर या आसपास गिर सकता है। बसंत का मौसम है और इतने पीले पत्ते जमीन पर ढेर दिखलाई पड़ते हैं। आप जानना चाहें तो हर पत्ते का एक इतिहास है। वह अपनी पारी खेलकर धरती पर आ चुका है। दिल्ली में यह पीले पत्ते दिखलाई पड़ते हैं और यहाँ से बाहर निकलता हूँ तो खेंतो पर पीले सरसों की पीली चादर बिछी दिखलाई पड़ती है। इस पीले पत्ते और उस पीली सरसों में कितना फर्क है ? जिन्दगी के दो अलग अनुभव हैं। एक मन को उदास करता है। दूसरा मन को खुश करता है। और दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक नीम के पेड़ के नीचे खड़ा है ।मेरे पैरो के नीचे पीले पत्ते ही पत्ते हैं। लेकिन मै ऊपर देखता हूँ, तो नये हरे पत्ते नजर आते हैं। ये पीले पत्ते अपनी जिंदगी जी चुके हैं। वे अगर डाल पर अड़े रहते तो नये पत्तों के लिए जगह ही नहीं होती। ऐसे ही किसी वक्त में कभी इन पीले पत्तों को भी किसी ने जगह दी होगी। जिन्दगी ऐसे ही चलती है। चलने का नाम ही जिन्दगी है।	
क)	गद्यांश को पढ़कर एक उचित शीर्षक लिखिए।	1
ख)	गुलमोहर को देखकर लेखक का मन उदास क्यों हो गया ?	2
ग)	भारत के लोगों को कमाल क्यों कहा गया है?	2
घ)	हर पत्ते का एक इतिहास है – कैसे?	2
ड़)	लेखक पीले पत्ते और पीली सरसों में किस प्रकार का अंतर पाता है – स्पष्ट कीजिए।	2
च)	जिन्दगी ऐसे ही चलती है – कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।	2
2.	निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।	1 x 5 = 5
	कहते यहाँ सब एक हैं, हम एक ही परिवार हैं। क्यों भाव कलुषित हो रहे,	

	क्यों द्वेष की दीवार है? दो दिलों के बीच है जो अब ढहाना चाहता हूँ। गीत आया है अधर पर गुनगुनाना चाहता हूँ। पत्थर सरीखे हो रहे, अन्तःकरण में पीर है। जो चार होते थे नयन अब क्यों उन्हीं में नीर है। प्रेम की सरिता हृदय में, फिर बहाना चाहता हूँ गीत आया है अधर पर गुनगुनाना चाहता हूँ आँधियों की खौफ से ही, रोशनी गुल हो गई है; घिर गई गलियाँ तिमिर से, सनसनी फैली हुई है। जुगनुओं – सा विथियों में; टिमटिमाना चाहता हूँ। गीत आया है अधर पर गुनगुनाना चाहता हूँ।	
(क)	इस संसार के बारे में सब लोग क्या कहते हैं?	1
(ख)	कवि किसे गिराना चाहता है और क्यों?	1
(ग)	आँखों में आँसू होने के कारणों को स्पष्ट कीजिए?	1
(घ)	आँधियों की खौफ से ही रोशनी गुल हो गई है – पंक्ति का भाव लिखिए।	1
(ङ)	कवि गीत गुनगुनाना क्यों चाहता है?	1
	अथवा	

	आया था हरे भरे वन में पतझर, पर वह भी बीत चला कोंपले लगी, जो लगी नित्य बढ़ने, बढ़ती ज्यों चन्द्रकला।। चम्पई चाँदनी भी बीती, अनुराग-भरी ऊषा आई। जब हरित पीत पल्लव वन में लौ सी पलाश लाली छाई।। पतझर की सूखी शाखों में लग गई आग, शोले लहके। चिनगी सी कलियाँ खिली और हर फूनगी लाल फूल दहके।। सूखी थी नसें बहा उनमें फिर बूँद-बूँद कर नया खून।। भर गया उजाला डालों में, खिल उठे नये जीवन-प्रसून अब हुई सुबह, चमकी कलगी, दमके मखमली लाल शोले फूले टेसु बस इतना ही समझे पर देहाती भोले।।	
(क)	कोंपलो की बढ़ने की तुलना चन्द्रकला से क्यों की गई है?	1
(ख)	ऊषा के आगमन का चित्र कवि ने किस प्रकार खींचा है?	1
(ग)	पलाश की तुलना किससे की गई है?	1
(घ)	पलाश के खिलने से जंगल का दृश्य कैसा हो गया?	1
(ङ)	भर गया उजाला डालों में खिल उठे नये जीवन प्रसून-पंक्ति का भाव लिखिए।	1
	खंड – ख	
3.	निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए	
(क)	लोकतंत्र का उत्सव है चुनाव	

(ख)	समाज के विकास में शिक्षा का योगदान	
(ग)	विद्यार्थियों में बढ़ती स्वास्थ्य समस्याएँ	
(घ)	महानगरों में आवास एक चुनौती	
4.	भारतीय समाज में महिलाओं पर बढ़ती अपराध की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी दैनिक अखबार के सम्पादक को पत्र लिखिए।	5
	अथवा	
	अपने शहर की पटरियों पर लगने वाले साप्ताहिक बाजारों से होने वाली असुविधाओं का उल्लेख करते हुए नगर निगम के आयुक्त को पत्र लिखकर उचित कदम उठाने के लिए अनुरोध कीजिए।	
5.	'अभिव्यक्ति और माध्यम 'पुस्तक के आधार पर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए	1X4 = 4
(क)	ब्रेकिंग न्यूज किसे कहते है?	
(ख)	संपादकीय किसे कहते है?	
(ग)	पीत-पत्रकारिता क्या है?	
(घ)	स्वतंत्रता से पहले के किसी दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।	
(ङ)	फ्रीलांसर किसे कहते है?	
6.	'दिवाली मेला' विषय पर एक फीचर तैयार कीजिए।	3
	अथवा	
	भारत सरकार की 'उज्जवला योजना' को आधार बनाकर आलेख लिखिए।	
	खंड –ग	
7.	निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए	6
	तुमने कभी देखा है खाली कटोरों में बसंत का उतरना यह शहर इसी तरह खुलता है इसी तरह भरता	

	और खाली होता है यह शहर इसी तरह रोज रोज एक अनंत शव ले जाते है कंधे अंधेरी गली से चमकती हुई गंगा की तरफ	
	अथवा	
	कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मूदि रहए दु नयान कोकिल-कलरव, मधुकर-धुनि सुनि, कर देइ झाँपइ कान।। माधव, सुन-सुन बचन हमारा। तुअ गुन सुंदरि अति मेल दूबरि गुनि-गुनि प्रेम तोहारा।।	
8.	निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए	2+2=4
(क)	कवि धनानंद मौन रहकर प्रेमिका के कौन से प्रण-पालन को देखना चाहते है?	
(ख)	'कार्नेलिया का गीत ' कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?	
(ग)	हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है ?स्पष्ट कीजिए (एक कम कविता के आधार पर)	
(घ)	'आकाश बदल कर बना मही' पंक्ति में 'आकाश' और 'मही' शब्द किसकी ओर संकेत करते हैं?	
9.	निम्नलिखित काव्यांशो में से किसी दो के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए	3X2=6
(क)	तोड़ो तोड़ो तोड़ो ये पत्थर ये चट्टाने ये झूठे बंधन टूटें।	
(ख)	भरत सौगुनी सार करत हैं, अति प्रिय जानि तिहारे। तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे।।	
(ग)	यह तन जारौ छार कै कहौ कि पवन उड़ाउ। मकु तेहि मारग होई परौ कंत धरै वहँ पाउ।।	

(घ)	धनआनंद मीत सुजान बिना, सब हो सुख-साज-समाज हरे तब हार पहार से लागत है, अब आनि कै बीच पहार परे।।	
10.	निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए	5
	दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुखी वह है जिसका मन परवश है। परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ-हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है।	
	अथवा	
	अभी भी मानव-संबंधों के पिंजड़े में भारतीय जीवन विहग बंदी है। मुक्त गगन में उड़ान भरने के लिए वह व्याकुल है। लेकिन आज भारतीय जन-जीवन संगठित प्रहार करके एक के बाद एक पिंजड़े की तिलियाँ तोड़ रहा है। धिक्कार है उन्हें जो तिलियाँ तोडने के बदले उन्हें मजबूत कर रहे हैं, जो भारतभूमि में जन्म लेकर और साहित्यकार होने का दंभ करके मानव मुक्ति के गीत गाकर भारतीय जन को पराधीनता और पराभव का पाठ पढ़ाते हैं।	
11	निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए	3x2 = 6
(क)	मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत, अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है – कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए।	
(ख)	”अतीत का समूचा मिथक संसार पोथियों में नहीं, इन रिश्तों की अदृश्य लिपि में मौजूद रहता था” – जहाँ कोई वापसी नहीं पाठ के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए।	
(ग)	बथुआ साग खाकर कब तक जीऊँ ‘संवदिया’ कहानी के आधार पर कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।	
(घ)	“मैं कहीं जाता हूँ तो ‘छूँछे’ हाथ नहीं लौटता।“ कथन का आशय ‘कच्चा चिट्ठा’ पाठ के आधार पर लिखिए।	
12	‘जयशंकर प्रसाद’ अथवा ‘रघुवीर सहाय’ का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	5
	अथवा	
	भीष्म साहनी अथवा हजारी प्रसाद दिवेदी का जीवन परिचय देते हुए उनकी	

	भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	
13.	पर्वतारोहण पर्वतीय प्रदेशों की दिनचर्या है, वही दिनचर्या आज जीविका का साधन बन गई है – कैसे	4
	अथवा	
	'तो हम सौ लाख बार बनाएंगे' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए	
14 (क) (ख) (ग) (घ)	14. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए 'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी ।' संदर्भ सहित विवेचन कीजिए पहाड़ों की चढ़ाई में भूप दादा का कोई जवाब नहीं। उनके चरित्र की विशेषताओँ पर प्रकाश डालिए। लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बतख से की है। 'हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी के नाले बना रही है।' क्यों और कैसे?	4x2 = 8